शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

औपनिवेशिक मुक्ति के उद्‌गाता : पर्क मोकवेल और जो जीहून

ली जिह्युन (शोधार्थी), प्रो. देवशंकर नवीन
हिन्दी अनुवाद, भारतीय भाषा केन्द्र,
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

शोध सारांश

दुनिया के साहित्यकारों ने हमेशा से मुक्ति के गीत गाये है। वह चाहे अध्यात्मिक मुक्ति की बात हो चाहे राजनीतिक मुक्ति की बात हो। साथ ही कविता के मूल स्वरुप को कायम रखने के लिए शुद्धता की पैरवी भी कवियों ने की है। मुक्तिकामियों को ऐसा साहित्य सदैव प्रेरणा देता रहा है। कोरिया के दो कवियों ने भी मुक्ति के लिए संघर्ष करने का सन्देश दिया है। यहाँ पर कोरिया के दो कवियों की चर्चा की जा रही है।

(क) यात्री

पर्क मोकवल

यात्री नदी पारकर
खेत पर चलता ऐसे
जैसे चलता बादल
चाँदनी के पीछे।
केवल एक रास्ते पर
दक्षिण की ओर सौ मील दूर
शराब पकाने वाले गाँव-गाँव
लगते सूर्यास्त की तरह।
चाँदनी के पीछे चलता बादल
वैसे चलता यात्री कहीं।

पहली कविता यात्रा कोरियाई कवि 'पर्क मोकवल' के द्‌वारा सन् 1946 में रची गयी है। यह कविता पर्क मोकवल के रचना के पहले स्तर में लिखी गई कविता है जिसमें प्रकृति को आधार बनाया गया है। उस समय कोरिया जापान का उपनिवेश था, इसलिए एक कवि इस उपनिवेश की स्थिति से मुक्त के लिए अपनी रचनाओं में संघर्ष को दिखाया है

(ख) वनह्वसम(मोकवल को)

जो जीहून

छउन का पहाड़
और दूर तक फैला आकाश।
सुनाई पड़ती चिड़िया की उदासी।
दो सौ मील दूर नदी की तरफ
फूल से गीली हो गयी।
यात्री का आँचल।
शराब पकाती उस नदी
के बगल गाँव में
होता सूर्यास्त।
मुरझाते फूल पर
दुःख और उदासी से विरत
चाँदनी में नीरवता से
हिलाते-डुलाते चला...।

कवि जो जीहून का उद्देश्य कविता की शुद्धता की रक्षा करना है। पर्क मोकवल कोरिया की ऐतिहासिक स्थिति निर्बल होने पर भी फिर से प्रकृति के पास वापस गया। इस कविता में यात्री की तरह ग्रामीण बिम्बों को लिया। उनकी कविता में संवेदना का वर्णन सौन्दर्य से बहुत प्रभावित

होता है। शाम के समय एक गाँव का चित्रण और यात्रा का भ्रमण सरल और संकेतार्थ के रूप में रचा गया है।

'जो जीहून' कवि पर्क मोकवल के समकालीन थे। जो जीहून पर्क मोकवल और 'पर्क दुजिन' के साथ एक कोरियाई साहित्यिक पत्रिका *'मुनजंग'*(वाक्य) में रचने लगे, इन तीन कवियों को छंगलोक मंडल कहा जाता था। इन तीन कवियों ने अपनी कविताओं में कोरियाई परम्परा का सजीव चित्रण किया है। जो जीहून ने अपनी कविता पर्क मोकवेल के उत्तर में लिखी है। दोनों कवियों की अभिव्यक्ति में काफी समानता है। इस कविता में यात्री-भ्रमण के माध्यम से गाँव का चित्र दिखाई देता है, जहाँ शराब पकाने का काम होता है। इस कविता का शीर्षक 'वनह्वसम' कोरियाई संस्कृति से संबंधित है; क्योंकि यह कोरियाई जोसन-काल में शिक्षित वर्ग द्वारा पहननेवाला पुरुष का कपड़ा है। उस समय शिक्षित वर्ग की दिलचस्पी फूल या प्रकृति को देखकर कविता की रचा करना था। कवि ने उस समय के शिक्षित वर्ग की तरह इस यात्री को प्रस्तुत किया और यात्री के वनह्वसम के कपडे का कोर नदी के पानी से भीगने के चित्रण को फूल से मुरझने की तरह चित्रित किया है। रात के अंधेरे में बादल चलने के चित्रण को चाँदनी के पीछे चलने की तरह वर्णन किया और इस कविता ने अकेलेपन को बढ़ा दिया है।

लेखिका का परिचय

ली जिह्युन दक्षिण कोरिया की निवासी हैं जिन्होंने भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर, एमफिल के बाद अनुवाद अध्ययन में पीएचडी कर रही हैं। इनकी आरम्भ से ही गहरी रूचि कोरियन और भारतीय साहित्य में रही है।